अध्याय 3

HKTIGB

# सिंधु घाटी की सभ्यता

(2600 ई.पू. से 1900 ई.पू.)

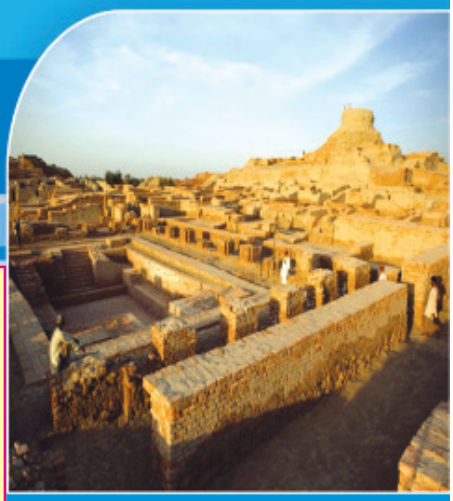

चित्र–3.1

पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि आदिमानव पेड़ों के नीचे या गुफाओं में रहा करते थे और घुमंतू जीवन व्यतीत करते थे। वे कंद–मूल, फल एवं मांस मछली खाकर जीवन यापन करते थे। समय के साथ–साथ उनके रहन–सहन और भोजन में परिवर्तन होने लगा। वे कृषि एवं पशुपालन भी करने लगे। कृषि, पशुपालन एवं धातुओं के प्रयोग ने मानव जीवन को काफी बदल दिया।

ekufp= 3-1

1. मानचित्र 3.1 में देखिए कि सिंधु नदी का मैदान कहाँ पर है?
2. यह मैदान आज किन–किन देशों के बीच फैला है?

इन बदलावों में जो सबसे बड़ा बदलाव था, वह था उनका एक जगह पर स्थाई रुप से बसना। इन लोगों की बसाहट ज्यादातर ऐसी जगह होती थी, जहाँ खेती के लिए उपजाऊ मिट्टी और पर्याप्त पानी मिलता रहे। ऐसी जगह आमतौर पर नदियों के किनारे मिलते हैं। यही कारण है कि मनुष्य नदियों के किनारे बसने लगे। आज भी हम देखते हैं कि नदी घाटियों में अधिक बसाहट होती है। इस पाठ में हम ऐसी ही एक सभ्यता के बारे में पढ़ेंगे जो आज से लगभग 4500 साल पहले सिंधु नदी के मैदान में विकसित हुई थी।

एक दिन कक्षा में सोनू और संध्या की शिक्षिका सिंधु घाटी के शहरों के बारे में बता रहीं थीं। उन्होंने कहा, ''बच्चो, आज से लगभग सौ साल पहले की बात है। सिंधु नदी के मैदान में कुछ लोगों को दो बड़े शहरों की चीजें मिट्टी के टीलों के नीचे दबी हुई मिली। ये शहर थे–हड़प्पा और मोहनजोदड़ो। खोजबीन से पता चला कि इन शहरों में आज से लगभग साढ़े चार हजार साल पहले लोग रहते थे।''

संध्या को बड़ा अचरज हुआ। उसने पूछा, क्या वास्तव में ये शहर मिट्टी में दबे हुए थे।

शिक्षिका – आप ही बताइए क्या आपने अपने आसपास किसी ऐसी जगह के बारे में सुना है जहां से जमीन के नीचे दबी कोई पुरानी चीज़ का पता चला हो।

सोनू – हाँ। मैंने सुना है कि पास के गाँव के खेत में एक किसान को जमीन में गड़ी हुई कुछ चीजें मिली हैं। उन चीजों में कुछ सिक्के एवं पुराने समय की मूर्तियाँ थीं।

क्या तुम्हारे गाँव में भी ऐसी कोई चीज किसी को ज़मीन के नीचे गड़ी मिली है?

शिक्षिका – बच्चो, इसी तरह लगभग सौ साल पहले सिंधु नदी के किनारे मोहनजोदड़ो नामक स्थान में कुछ मजदूर रेल्वे लाइन बिछाने का काम कर रहे थे। रेल्वे लाइन के बीच में आ रहे एक टीले को हटाने के लिए जब उन्होंने खुदाई की तो पता चला कि उसके नीचे एक दीवाल थी। लोगों की उत्सुकता बढ़ी और उन्होंने उसके नीचे और खुदाई की। खुदाई से पता चला कि एक पूरा–का–पूरा शहर मिट्टी के नीचे दबा हुआ है। विद्वानों ने जब आसपास के इलाकों में खुदाई की तो इस तरह की और कई जगहें मिलीं। इनमें से ज्यादातर जगहें सिंधु नदी के आस–पास स्थित थीं। इस कारण इसे सिंधु–घाटी की सभ्यता के नाम से पुकारा जाने लगा। आजकल इसे हड़प्पा संस्कृति भी कहा जाता है।

संध्या ने पूछा – इसे हड़प्पा संस्कृति क्यों कहते हैं ?

शिक्षिका – सबसे पहले सन् 1921 ई. में हड़प्पा नामक जगह पर खुदाई की गई थी। वहाँ से ईंट, मिट्टी के बर्तन, आदि मिले थे बाद के स्थानों (जैसे मोहनजोदड़ो, आदि) की खुदाई में भी वैसी ही वस्तुएँ, मकान आदि मिले जिनसे वहाँ के जन–जीवन, रहन–सहन, खान–पान, पहनावा, तीज–त्यौहार और उस काल की संस्कृति आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त हुआ। इस कारण इसे हड़प्पा संस्कृति का नाम दिया गया।

चित्र 3.2 कालीबंगा की खुदाई से मिले अवशेष

श्रीकांत ने पूछा – हड़प्पा और मोहनजोदड़ो कहाँ पर हैं? इनकी खोज किसने की?

शिक्षिका – बच्चो, हड़प्पा और मोहनजोदड़ो वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब एवं सिंध प्रांत में है। मोहनजोदड़ो की खुदाई सन् 1922 ई. में श्री राखलदास बनर्जी के नेतृत्व में की गई थी।

चित्र 3.3 नक्काशीदार बर्तन हड़प्पा संस्कृति

विकास ने पूछा – क्या इस सभ्यता से संबंधित कोई जगह भारत में भी है ?

शिक्षिका – तुमने ठीक पूछा– अभी तक भारत में लगभग 250 से अधिक ऐसी जगहों की खोज की जा चुकी है। इनमें प्रमुख हैं– गुजरात में धोलावीरा एवं लोथल, राजस्थान में कालीबंगा, पंजाब में रोपड़ तथा उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर। इस प्रकार सिंधु सभ्यता का फैलाव अफगानिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और पश्चिमी–उत्तर प्रदेश तक था। यह सभ्यता लगभग 2600 ई.पू. से 1900 ई.पू. तक विकसित रही।

यह आज से कितने साल पहले की बात है ? गणना कीजिए।

तुषार ने पूछा– आप हड़प्पा सभ्यता के बारे में विस्तार से बताइए।

शिक्षिका – बच्चो, इस बारे में हम कुछ चर्चा करेंगे। पहले मानचित्र को ध्यान से देखिए और बताइए की ये स्थान किन–किन नदियों के किनारे हैं ? इनकी सूची बनाइए।

मानचित्र 3.1 को देखकर स्थानों एवं नदियों के नामों की सूची बनाइए।

## शहरों की बसाहट

दूसरे दिन शिक्षिका से उज्ज्वल ने कहा – आप हमें सिंधु सभ्यता के बारे में विस्तार से बताइए।

शिक्षिका – सबसे पहले हम सिंधु सभ्यता के लोगों की नगर योजना एवं भवन निर्माण के बारे में चर्चा करेंगे।

बच्चो, हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से पता चला कि, ये नगर भी आज के शहरों में बने कालोनियों की तरह सुनियोजित ढ़ंग से बसाए गए थे। नगर दो हिस्सों में बसे थे। एक हिस्सा ऊपरी भाग में था जिसके चारों तरफ एक परकोटा (ऊँची दीवार) था। दूसरा हिस्सा थोड़ा नीचे की तरफ था। निचले भाग के नगर में बसाहट अधिक थी। सड़कें चौड़ी और सीधी थीं जो एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं। सड़क के दोनों किनारों पर मकान और नालियाँ बनी थी। मकान पक्की ईंटो से बने थे तथा एक मंजिला और दो मंजिला दोनों तरह के थे। मकानों में आँगन, शौचालय और स्नानघर बने हुए थे। प्रत्येक मकान में पानी के निकास के लिए नालियाँ बनी थीं जो सड़क के किनारे प्रमुख नालियों में जाकर मिलती थीं। नालियाँ पक्की और ढँकी हुई होती थीं। इन सब बातों से स्पष्ट है कि सिंधु सभ्यता की सबसे बड़ी विशेषता सुनियोजित ढंग से बनाये गए मकान और बसाये गए नगर थे।

## प्रमुख भवन

अंकिता ने पूछा – चित्र 3.4 में एक कुंड जैसा क्या दिखाई दे रहा है?

चित्र–3.4 मोहनजोदड़ो के स्नानागार

शिक्षिका – इस चित्र में आपको जो कुंड या तालाब जैसा दिखाई दे रहा है, वह मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त स्नानागार है। यह नगर के ऊपरी हिस्से में बना हुआ है। इस स्नानागार के चारों ओर कमरे बने हुए हैं। बीच आँगन में चौकोर कुंड है। यह कुंड लगभग 12 मीटर लंबा, 7 मीटर चौड़ा और 2. 5 मीटर गहरा है। इसके किनारे में कुआँ भी बना हुआ था। संभवतः इससे पानी भरा जाता रहा होगा। गंदे पानी की निकासी के लिए नाली भी बनी हुई हैं। इसके फर्श की जुड़ाई भी इस तरह की गई थी कि किसी प्रकार की नमी या पानी का रिसाव न हो। इस स्नानागार का प्रयोग संभवतः किसी सार्वजनिक कार्य, धार्मिक कार्य या किसी विशेष कार्यक्रम के समय किया जाता रहा होगा।

आपस में चर्चा कीजिए और बताइए कि इस स्नानागार का प्रयोग मोहनजोदड़ो के निवासी किस तरह करते होंगे ?

विनय ने पूछा – क्या इस तरह का कोई और भवन भी प्राप्त हुआ है ?

शिक्षिका – विनय तुमने ठीक पूछा– हड़प्पा की खुदाई में एक विशाल भवन का पता चला है जो गोदाम की तरह का है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि यह अन्नागार (अनाज रखने का स्थान) होगा। ऐसे भवन सिंधु घाटी के कई और जगहों से भी प्राप्त हुए हैं। संभवतः इन अन्नागारों में आसपास के गाँवों से कर के रुप में प्राप्त अनाज रखे जाते रहे होंगे। इनका उपयोग प्राकृतिक आपदाओं जैसे– भूकंप, बाढ़ या सूखे की स्थिति से निपटने के लिए किया जाता रहा होगा।

## शासन व्यवस्था

सोनू ने पूछा – सिंधु घाटी वासियों की शासन व्यवस्था कैसी थी ? क्या वहाँ राजा होते थे ?

शिक्षिका – बच्चो, उन शहरों में कुछ भवन बड़े थे और एक परकोटे से घिरे थे। लगभग सभी शहरों में एक ऊँची बस्ती होती थीं जिसमें प्रमुख भवन हुआ करते थे। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि वहाँ एक वर्ग शासकों का था जो शासन चलाते होंगे। संभवतः केन्द्रीय शासन व्यवस्था रही होगी जिसके अधीन अन्य छोटे–छोटे प्रांत होते होंगे। वहाँ राजा होते थे या नहीं, हमें सही–सही पता नहीं है। किन्तु कुछ मूर्तियों को देखकर लगता है कि वे उनके राजाओं के रहे होंगे।

## काम–धंधे

मोनू ने पूछा– सिंधु घाटीवासी क्या–क्या काम धंधे करते थे?

शिक्षिका – उनका मुख्य व्यवसाय कृषि था। वे पशुपालन भी करते थे। संभवतः इसी कारण वे नदियों के किनारे बसते थे। सिंधु वासियों की प्रमुख फसलें गेहूँ, जौ, तिल, कपास आदि थे।

सिंधु घाटी के शहरों में अच्छे कुशल कारीगर भी रहते थे। उन्हें धातुओं का ज्ञान भी था। वे ताँबा, पीतल, राँगा, शीशा एवं काँसा आदि धातुओं से परिचित थे। खुदाई में यहाँ से बड़ी मात्रा में कांसे और तांबे के बर्तन, औजार और मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। काँसे का प्रयोग होने के कारण इस सभ्यता को कांस्य युगीन सभ्यता भी कहते हैं, लेकिन इन्हें लोहे का ज्ञान नहीं था। इस कारण दैनिक जीवन में पत्थरों से बने औजारों का काफी महत्व था। औजारों के अलावा सिंधु घाटी के लोग रंग–बिरंगे कीमती पत्थरों के बारीक मनके से माला बनाते थे। समुद्री सीपों व शंखों से चूड़ियाँ भी बनाते थे। उनके कुम्हार तो कमाल के कारीगर थे। वे बहुत ही सुंदर बर्तन बनाते थे जिन पर चित्र भी बनाए जाते थे। यहाँ उद्योग से संबंधित वस्तुएँ, कुम्हार के भट्ठे, काँसा बनाने वाले कारीगर का भट्ठा, कपड़े रंगने के भट्ठे, और मनके बनाने के कारखानों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।

## व्यापार

सिंधु घाटीवासियों का व्यापार भी उन्नत अवस्था में था। यहाँ आंतरिक एवं विदेशी दोनों तरह के व्यापार होते थे। सिंधुवासी कपास, इमारती लकड़ी, ताँबे के औजार, हाथी दाँत एवं पत्थर के आभूषणों का निर्यात करते थे। वे सोना, रंग–बिरंगे कीमती पत्थर, आदि का आयात करते थे। विदेशी व्यापार में मेसोपोटेमिया के शहर प्रमुख केन्द्र थे। आंतरिक व्यापार जल एवं थल दोनों मार्गों से और विदेशी व्यापार मुख्य रुप से जल मार्ग से होता था। लोथल की खुदाई से नाव का एक नमूना एवं गोदी के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि लोथल से जल मार्ग द्वारा व्यापार होता था।

काजू ने पूछा – गोदी किसे कहते है?

शिक्षिका – आपने ठीक पूछा– गोदी उस स्थान को कहते हैं, जहाँ समुद्र या नदी किनारे सामान चढ़ाने और उतारने के लिए जहाज खड़ा किया जाता है। यह आधुनिक बंदरगाह का छोटा रुप होता है। लोथल को हम बंदरगाह नगर भी कह सकते हैं।

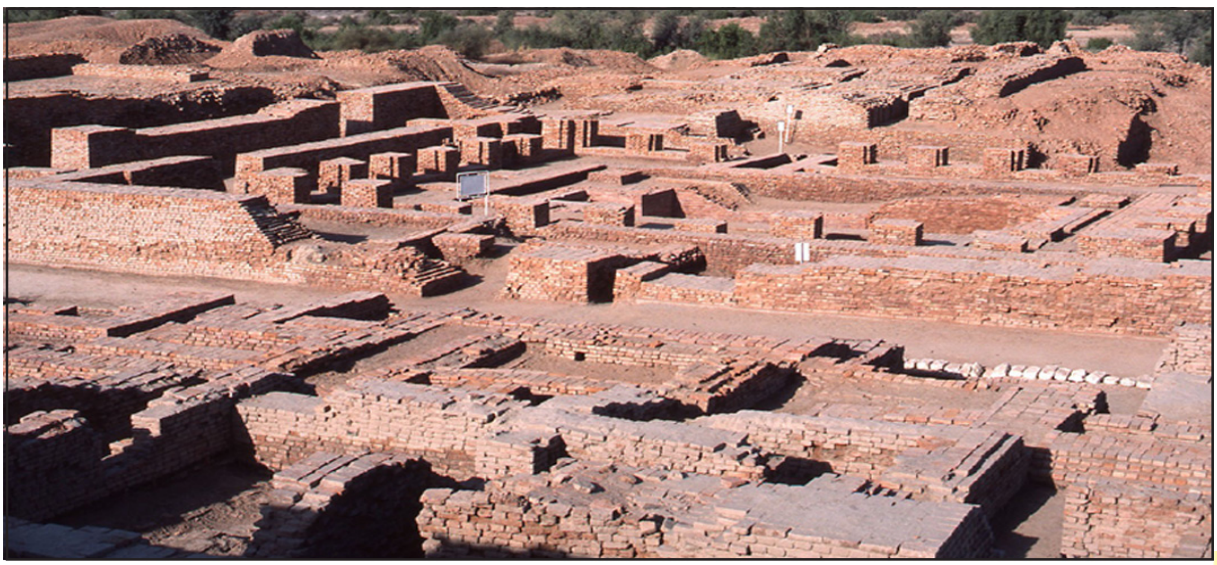

चित्र–3.5 मोहनजोदड़ो शहर की सड़कें एवं नालियाँ

## खान–पान, रहन–सहन

संदीप ने पूछा – वहाँ के लोग क्या–क्या खाते होंगे और क्या पहनते होंगे? क्या वे भी आदि मानवों की तरह खाल पहनते थे ?

शिक्षिका – सिंधु सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, तिल, दूध, मांस, मछली आदि खाते थे। वे सूती एवं ऊनी कपड़ों का प्रयोग करते थे। हड़प्पा की खुदाई से प्राप्त शृंगारपेटी तथा अन्य आभूषणों के अवशेषों से पता चलता है कि स्त्री और पुरुष दोनों शृंगार करते थे। स्त्रियाँ माला, चूड़ियाँ, बाजूबंद, कर्णफूल, पायल आदि आभूषणों का प्रयोग करती थीं। जो सोना, हाथीदाँत, ताँबे और बहुमूल्य पत्थरों के बने होते थे।

सिंधुवासी मनोरंजन के लिए नृत्य, पासे का खेल आदि खेलते थे। बच्चे मिट्टी के खिलौनों का उपयोग करते थे। उन शहरों के खंडहरों से बहुत से खूबसूरत खिलौने मिले हैं।

सोनू जानना चाहता था कि वे लोग किन देवी–देवताओं की पूजा करते थे। शिक्षिका ने समझाया कि सिंधु सभ्यता के अवशेषों से प्राप्त वस्तुओं से लोगों के धर्म के संबंध में भी पता चलता है। यहाँ मातृदेवी की बहुत–सी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं जिनसे यह माना जाता है कि वे मातृदेवी की पूजा करते थे। हड़प्पा में तीन मुँह वाली आकृति की एक मोहर भी प्राप्त हुई है जिनके सिर पर सींग का मुकुट है और चारों तरफ शेर, हाथी, गेंडा और हिरन के चित्र बने हुए हैं। माना जाता है कि वह पशुपति या शिव का कोई पूर्व रूप रहा होगा। खुदाई से प्राप्त अधिकांश मोहरों और बर्तनों में पीपल के पेड़ तथा कई तरह के पशुओं के चित्र बने हैं। एक मुहर में कूबड़दार बैल का चित्र मिला है। इन बातों से लगता है कि वे वृक्ष पूजा एवं पशु पूजा भी करते थे। पीपल उनका प्रमुख पूजनीय वृक्ष था। सिंधुवासी मृतकों का अंतिम संस्कार भी करते थे। संभवतः वे शवों को जमीन में गाड़ देते थे।

चित्र–3.6 बैल गाड़ी का खिलौना

## लिपि

शुभ्रकांत ने पूछा – क्या सिंधु सभ्यता के लोग पढ़ना लिखना भी जानते थे ?

शिक्षिका – बच्चो, खुदाई से जो मोहरें, मिट्टी के बर्तन एवं अन्य वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं उनमें लिपि के कुछ नमूने मिलते है। यह चित्रलिपि है। जो दाई से बाई ओर लिखी जाती थी। दुर्भाग्य से इस लिपि को आज तक पढ़ा नहीं जा सका है। अतः हमें उनकी पढाई–लिखाई के बारे में सही–सही जानकारी नहीं मिल पाई हैं।

HX7RHV

## सिंधु सभ्यता का अंत

सोनू ने पूछा – इतनी विकसित सभ्यता का अंत कैसे हो गया ? किस प्रकार पूरा–का–पूरा शहर मिट्टी में दब गया ?

शिक्षिका – बच्चो, यह विषय आज तक रहस्यमय बना हुआ है कि इतनी बड़ी सभ्यता का अंत कैसे हो गया। किंतु ऐसा माना जाता है कि किन्हीं कारणों से उनका शहरी जीवन धीरे–धीरे कमजोर होता गया। लोग ऐसे काम धंधों में लगने लगे जिसके लिए शहरों में बसकर रहना जरूरी नहीं रहा होगा। इस कारण इन शहरों की आबादी घटने लगी होगी और शहर समय के साथ नष्ट हो गए होंगे। वहाँ रहनेवाले लोग छोटे–छोटे गांवों में रहने लगे होंगे।

कुछ विद्वान यह भी मानते हैं कि बाढ़ या भूकंप जैसे किसी प्राकृतिक उथल–पुथल के कारण सिंधुवासी धीरे–धीरे वह स्थान छोड़कर चले गए होंगे।

ये सभी बातें सुनकर बच्चों को बहुत आश्चर्य हुआ। सब सिंधु घाटी के शहर कैसे थे, कैसे खत्म हुए होंगे, इन बातों पर चर्चा करते हुए अपने–अपने घर चले गए।

## अभ्यास के प्रश्न

### (अ) खाली स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. मोहनजोदड़ो की खुदाई सन् ––––– में हुई।
2. हड़प्पा की खुदाई सन् ––––– में हुई।
3. लोथल नगर को ––––– नगर भी कहा जाता है।
4. अनाज का गोदाम ––––– में प्राप्त हुआ है।
5. विशाल स्नानागार ––––– में है।
6. सिंधुवासी विदेशी व्यापार ––––– मार्ग से करते थे।

### (ब) प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. सिंधु सभ्यता के लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या था ?
2. सिंधुवासी कौन–कौन सी धातुओं से परिचित थे ?
3. सिंधुवासी किन–किन वस्तुओं का व्यापार करते थे ?
4. सभ्यताओं का नदियों के किनारे विकसित होने के क्या कारण हैं ?
5. इस सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता क्यों कहते हैं ?
6. हड़प्पा और मोहनजोदड़ो क्यों प्रसिद्ध हैं ?
7. लोथल की प्रसिद्धि के क्या कारण हैं ?
8. सिंधु सभ्यता के लोगों के रहन–सहन का वर्णन कीजिए।
9. सिंधु सभ्यता के लोग किन–किन सामाजिक वर्गों में बँटे थे ?

### (स) संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–

1. नगर–योजना  2. भवन निर्माण  3. विशाल स्नानागार  4. अन्नागार  5. गोदी

### ;kX;rk foLrkj &

1. सिरकट्टी–पांडुका

   'लोथल की तरह छत्तीसगढ़ में गरियाबंद जिले के पांडुका ग्राम के पास सिरकट्टी नामक स्थान पर पैरी नदी में प्राचीन बंदरगाह का अवशेष प्राप्त हुआ है। यहाँ पर स्थित डाकयार्ड अर्थात् व्यापारिक नाव खड़े होने की गोदी (बंदरगाह) है। यह चट्टानों को काट कर बनाई गई थी जो 5 से 6.5 मीटर तक चौड़ी है। ऐसा अनुमान है कि बंदरगाह के साथ वस्तु–विपणन केन्द्र भी था। यहाँ से देश–विदेश में नदी मार्ग द्वारा व्यापार होता था।

   यह लोथल में प्राप्त बंदरगाह के बाद के किसी काल का है। लेकिन उसके समान ही है।
2. पकी मिट्टी से बने खिलौनों की सूची बनाइए। कौन से खिलौने बच्चों को अधिक पसंद आए होंगे?
3. सिंधु घाटी के सौन्दर्य प्रसाधन और आज के सौन्दर्य प्रसाधन में क्या अंतर है?